सेवा संगम कार्यक्रम
16–17 फरवरी – 2008

'सेवा कार्य से राष्ट्र वैभवशाली – शक्ति संपन्न करना है ।

मा0 श्री मोहन जी भागवत

''हम सभी कार्यकर्ता सेवा कार्य में जुटे हैं । अपने लिये नहीं, अपने समाज एवं देश के लिये – इसके लिये यह सभी प्रयास है । वनवासी–गिरिवासी तथा उपेक्षित बंधुओं के पास जाकर, उनको समाज के साथ जोड़ने का काम ही सेवा है । ईसाई मिशनरियों की सेवा समाज को–देश को तोड़ती है, यह ध्यान में रखकर अपना कार्य अधिक व्यापक हो । पंचवर्षीय योजना तो पूरी करना ही है, साथ ही अखण्ड रूप से सेवा करते हुये, अपने राष्ट्र को वैभवशाली एवं शक्ति–संपन्न बनाना है, ऐसा स्फूर्तिप्रद उद्‌बोधन राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरकार्यवाह मा0 श्री मोहन जी भागवत जी ने विश्व हिन्दू परिषद सेवा विभाग की योजना से राष्ट्रीय सेवा संवर्धन समिति द्वारा आयोजित 'सेवा संगम–2008' के उद्‌घाटन कार्यक्रम में दिया । यह 'सेवा संगम' दि0 16–17 फरवरी 2008 को वडोदरा के निकट श्री स्वामी नारायण मंदिर, हरीधाम – सोखड़ा के पुण्य क्षेत्र में संपन्न हुआ ।

मंचपर भानुपुरा पीठ (मध्य प्रदेश) के शंकराचार्य पूज्यपाद श्री श्री 1008 स्वामी दिव्यानंद तीर्थ जी महाराज, मा0 श्री अशोक जी सिंहल, मा0 श्री प्रवीणभाई तोगड़िया जी, राष्ट्रीय सेवा संवर्धन समिति के अध्यक्ष श्री प्रवीणशंकर पंड्या जी, सेवा संगम के स्वागताध्यक्ष श्री दिलीपभाई पटेल जी, मा0 श्री मधुभाई कुलकर्णी, मा0 श्री अशोकराव चौगुले–उपाध्यक्ष विहिप, श्री रमेश जी मोदी – कोषाध्यक्ष विहिप, संत श्री युधिष्ठिर जी महाराज–सदानी दरबार रायपुर, स्वामी नारायण मंदिर – सोखड़ा के ज्येष्ठ स्वामी पूज्यपाद श्री कोठारी स्वामी स्वामी जी, पूज्य श्री गुरूपद स्वामी जी, पूज्य श्री प्रेमस्वरूप स्वामी जी तथा अन्य श्रेष्ठ संत वृंद, श्री सीताराम जी अग्रवाल – सेवा प्रमुख–विहिप उपस्थित थे । पूज्यपाद शंकराचार्य जी के कर–कमलों द्वारा द्वीप प्रज्वलन कर कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ । श्री सीताराम जी अग्रवाल ने मंचासीन महानुभावों का परिचय प्रदान कर माल्यार्पण से स्वागत किया । स्वागताध्यक्ष श्री दिनेशभाई पटेल जी ने मंचासीन श्रेष्ठ व्यक्तियों का एवं आये हुये प्रतिनिधियों का स्वागत किया । प्रस्ताविक भाषण श्री सीताराम अग्रवाल जी ने किया । राष्ट्रीय सेवा संवर्धन समिति के अध्यक्ष श्री प्रवीणशंकर पंड्या जी ने सेवा कार्यों की महत्ता प्रतिपादित करते हुये सेवा कार्यों के लिये धन का अभाव नहीं रहेगा, यह आश्वासन भी दिया ।

उद्‌घाटन सत्र में पूज्यपाद श्री शंकराचार्य जी ने सेवा कार्य में सभी को जुट जाने का आवाहन करते हुये आशीर्वाद प्रदान किया ।

गुजरात प्रदेश के महामंत्री श्री कौशिकभाई ने धन्यवाद अर्पण किये ।

सेवा संगम में उपस्थित जेष्ठ अधिकारियों द्वारा दि0 16–17 फरवरी को विभिन्न विषयों पर मार्गदर्शन किया । जैसे –

1.	मा0 श्री प्रवीणभाई तोगड़िया	: 1) परिषद उद्देश्य एवं लक्ष्य 2) सेवा कार्य एवं प्रचार–प्रसार
2.	श्री विनायकराव देशपांडे	: कार्यकर्ताओं को दिशा दर्शन एवं प्रशिक्षण योजना
3.	मा0 श्री मधुभाई कुलकर्णी	: कार्यकर्ता निर्माण
4.	श्री माधवराव मेंहेंदले	: सेवा कार्य एवं मूल्यांकन
5.	मा0 श्री एस. वेदान्तम	: सेवा कार्य में शासकीय सहयोग एवं तमिलनाडु मे सेवा कार्य
6.	श्री मधुकरराव दीक्षित	: आगामी पंचवर्षीय योजना
7.	श्री नंदलाल लोहिया	: ट्रस्ट बावत तांत्रिक जानकारी
8.	श्री सीताराम अग्रवाल	: सेवा संस्थायें और विश्व हिन्दू परिषद संगठन

प्रांत से आये हुये विभिन्न कार्यकर्ताओं द्वारा अपने प्रदेश के उल्लेखनीय सेवा कार्यों की जानकारी दी गयी । 'सेवा संगम स्मारिका एवं सेवा विभाग की Web-Site का विमोचन पूज्यपाद शंकराचार्य जी के कर–कमलों से संपन्न हुआ ।

दि0 17 फरवरी सायं के समापन कार्यक्रम में 2006–07 का वार्षिक अहवाल (Annual Report) का विमोचन मा0 श्री अशोक जी सिंहल द्वारा हुआ । साथ ही राष्ट्रीय सेवा संवर्धन से संलग्न हुये 81 ट्रस्टों को प्रमाणपत्र पूज्य शंकराचार्य जी के कर–कमलों द्वारा प्रदान किये गये ।

समापन कार्यक्रम में अपने उद्बोधन में मा0 श्री अशोक जी ने कहा कि, ''जो पिछड़े समाज बन्धुओं की सेवा का हमने संकल्प किया है, उनकों अछूत, अनुसूचित जाति–जनजातियों में रखने का घृणित कार्य हिन्दू समाज ने नहीं किया । यह कार्य विदेशी शासकों ने, उन्होंने धर्मान्तरण स्वीकार न करने का कारण दंड स्वरूप दिया गया । हमारे समाज में जातिप्रथा कभी भी नहीं थी । वे शूर सैनिक हैं, जिन्होंने दंड स्वीकार किया, किन्तु अपना धर्म नहीं छोड़ा । यह भाव मन में सदैव रखकर प्रायश्चित स्वरूप उनकी सेवा हमें करके अपने समाज को संघटित, शक्ति–संपन्न करना है ।''

समापन के आशीर्वचन में पूज्यपाद शंकराचार्य जी ने सेवा कार्य का महत्व प्रतिपादित करते हुये, विश्व हिन्दू परिषद के कार्य में संपूर्ण सहयोग देने का भी भावपूर्ण आश्वासन दिया ।

श्री स्वामी नारायण मंदिर के पूज्यपाद हरीप्रसाद स्वामी तथा अन्य संत वृन्द एवं सभी के प्रति अपनी कृतज्ञता अर्पण करते हुये श्री अरविंद चौथाईवाले जी ने सभी को धन्यवाद अर्पण किया ।

समापन के अंतिम चरण में पूज्य श्री गुरूपद स्वामी जी ने हम सभी हिन्दू हैं, हम एक हैं यह भाव अपने संक्षिप्त उद्बोधन में प्रगट करते हुये श्री स्वामी नारायण मंदिर की ओर से पू0 श्री शंकराचार्य जी, मा0 श्री अशोक जी सिंहल, मा0 श्री प्रवीणभाई तोगड़िया जी, स्वामी विद्यानंद जी महाराज संकेश्वर महादेव – कावी एवं पूज्य श्री दयाराम जी महाराज–कंबाई, जिला–दाहोद का श्रीफल एवं शाल अर्पण कर विशेष सम्मान किया ।

पूर्ण निर्धारित कार्यक्रम के कारण पूज्यपाद हरीप्रसाद स्वामी जी विदेश यात्रा पर होते हुये भी उन्होंने सदैव सेवा संगम एवं विहिप के जेष्ठ पदाधिकारियों की विशेष चिंता एवं कार्यक्रम सफलता से करने का निर्देश मंदिर के पदाधिकारियों को किया । उनके ही कृपा से कार्यक्रम सफलता पूर्वक संपन्न हुआ ।

सेवा संगम में 31 प्रदेशों से 316 प्रतिनिधियों ने भाग लिया तथा 118 ट्रस्टों के पदाधिकारी उपस्थित थे ।

अरविंद चौथाईवाले
अ0भा0 सह–सेवा प्रमुख
विश्व हिन्दू परिषद